4th Paper :

<05.02.94>

● प्रथम अफीम युद्ध के कारण एवं परिणाम का वर्णन करें!

◆ चीन का कन्फ्यूशियसवादी विचार दर्शन पर आधारित ईश्वरीय साम्राज्य बहुत दिनों तक सुरक्षित नहीं रहा। क्योंकि विदेशी घुसपैठ के कारण इसका स्वर्णिम दरवाजा खोल दिया गया। इस क्रम के प्रारंभ में ब्रिटेन अपने साम्राज्यवादी हितों की पूर्ति के लिए प्रवेश किया किन्तु चीन की मंचू सरकार इसका तीव्र विरोध की। इसी विरोध की क्रम में प्रथम अफीम युद्ध 1839 में लड़ा गया। यह युद्ध मुख्यतः अफीम के प्रश्न पर लड़ा गया। इसी कारण इसे अफीम युद्ध की संज्ञा दी जाती है। अफीम तो युद्ध को मात्र अवसर प्रदान किया जबकि मौलिक कारण कुछ और ही थे।

विनायक ने ठीक ही लिखा है – "Opium howerer Was the accasilm and not the Cause of the War between the British the Chinese."

अफीम युद्ध के दो कारण थे - मौलिक कारण एवं तात्कालिक कारण। अफीम का प्रश्न तो महज मात्र तात्कालिक कारण बना। इसके मौलिक कारण में साम्राज्यवादी स्वार्थ था। ब्रिटेन चीन में साम्राज्यवाद का प्रसार एवं अधिक से अधिक व्यापारिक अधिकारों को प्राप्त करना चाहता था। व्यापार के क्रम में मंचू सरकार बाधा उत्पन्न करती थी क्योंकि उनकी उपस्थिति से चीन की स्वर्णिम भूमि का अपमान समझा जाता था। उनकी व्यापार बहुत सीमित थी। वे केवल कैंटन से व्यापार कर सकते थे। वे मुक्त व्यापार नहीं कर सकते थे। चीन के लोग अंग्रेजों के साथ समानता का संबंध नहीं रखते थे। इससे उनके स्वाभिमान पर आघात पहुँचा था। कलाईड ने लिखा है - "चीन वासियों को व्यापार से उतनी हानि नहीं हुई जितनी कि साम्राज्यवाद की प्रसार से हुई"

इस तरह युद्ध की पृष्ठभूमि पहले से तैयार हो रही थी। ब्रिटेन अपने साम्राज्यवादी

रवाओं को उठाना चाहता था और चीन उसको रोकना चाहता था। केवल एक बन्दरगाह तक व्यापार को सीमित रखना, मनमानी बन्दरगाह टैक्स, चीन के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध पर रोक आदि ऐसे कारण थे जिसको लेकर अंग्रेज ही नहीं अपितु दूसरे देश के लोग भी क्षुब्ध थे।

मौलिक कारण –

1. साम्राज्यवाद का प्रसार – इस युद्ध का कारण राजनीतिक साम्राज्यवाद था। ब्रिटेन व्यापारिक एवं उद्योग प्रधान देश था। यहाँ औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी। ब्रिटेन को कच्चे माल की जरूरत थी। अतः इसके लिए चीन का चयन किया गया। पूर्वी एशिया में ब्रिटेन का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। चीन में कच्चे माल की बहुतायत थी, चीन की आबादी घनी थी। अतः निर्मित माल के बिक्री के लिए चीन एक अच्छा बाजार का काम कर सकता था। लेकिन अंग्रेज चीन में केवल व्यापारी बनकर नहीं रहना चाहते थे, वे व्यापारिक हितों के अतिरिक्त राजनीतिक एवं प्रशासन पर भी नियंत्रण कायम करना चाहते थे। ऐसा कर वे अपने हितों को भविष्य में बनाये रख सकते थे।

2. आर्थिक लाभों की प्राप्ति – चीन में अधिक से अधिक आर्थिक एवं सामरिक लाभ प्राप्त करना अंग्रेजों का लक्ष्य था क्योंकि चीन की सरकार इस मामले में उदासीन थी। Horky ने Modern Chinese history में लिखा है – "Our Calestial empire possesses all things in aliandance and lacks no product there was the for need to import the manufactires of outside business in exchange for own produce."

वे समझते थे कि केवल चीन में विदेशी व्यापार बन्द कर दिया जाता है तो इससे चीन को कुछ भी नुकसान नहीं होगा। दूसरी तरफ विदेशी आयात था-

पारित दरवाजा खुले रखने देने के लिए किसी भी शर्त को मानने के लिए भी तैयार थे। प्रारंभ में व्यापार एकतरफा था। व्यापारिक संतुलन को अपने पक्ष में करने के लिए ब्रिटेन अफीम का व्यापार शुरू किया। धीरे-धीरे चीन में अफीम की मांग बहुत बढ़ गयी। चीन में विदेशी व्यापारियों को कई तरह की दिक्कतें हो रही थी। वे केवल कैण्टन के बन्दरगाह से व्यापार कर सकते थे। चीन के अन्य क्षेत्रों में व्यापार नहीं कर सकते थे। व्यापार के निरीक्षण के लिए अधिकारी नियुक्त थे। विदेशी व्यापारियों को सम्राट के सम्मुख झुककर नौ बार प्रणाम करना पड़ता था। इस प्रकार की प्रथाओं को बंद चाहते थे। इसमें सबसे अधिक असंतोष का कारण कोहॉंग का नियंत्रण आदेश था। विनायक ने लिखा है - "The co-hong was the butter between the foreign Community and the chinese official worled."

इस आदेश की प्राप्ति के बिना कोई कैण्टन नहीं जा सकता था। वे अपने चारदीवारी से बाहर नहीं जा सकते थे। वे चीनी भाषा नहीं सीख सकते थे। वे चीन को ईसाई नहीं बना सकते थे। इससे अंग्रेज व्यापारी असंतुष्ट थे।

3. राजनैतिक श्रेष्ठता - चीन के लोग अपने राज्य को ईश्वरीय सामाज्य समझते थे। वे अपने को श्रेष्ठ सभ्य मानते थे और उनकी नजर में दूसरे असभ्य थे। चीन के अधिकारी अंग्रेज एवं अमेरिकनों को नीची नजर से देखते थे। अतः अंग्रेज चीन में व्यापारिक सुविधा के साथ समानता का व्यवहार प्राप्त करना चाहते थे। इस युद्ध का कारण यह था कि पश्चिम देश समानता के आधार पर चीन के साथ सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे और व्यापार में बराबरी का अधिकार चाहते थे।

अंग्रेज व्यापारी की सुनवाई चीनी अदालत में होती
थी और उन्हें दण्डित किया जाता था। वे चाहते थे
कि उनके अभियुक्तों का निर्णय उनके देश की
अदालतें करें। इस प्रश्न पर अंग्रेज एवं
अमेरिकन काफी नाराज़ था। इस अधिकार की
प्राप्ति के लिए लार्ड मेकार्टनी के नेतृत्व में एक
ब्रिटिश दूतमंडल आया लेकिन उसे सफलता नहीं
मिली। इस क्रम में 1784 में लेडी ह्यूजेस नामक
जहाज का मुकदमा प्रसिद्ध हुआ। इस जहाज का एक
अंग्रेज सिपाही ने एक चीनी महिला की हत्या कर दिया था।
चीन की सरकार इसकी सुनवाई चीन की अदालत
में करना चाहती थी। इस तरह के अनेक
न्यायिक प्रश्न मतभेद के कारण था।
Castim ने अपनी पुस्तक Great Britain and
China में इस तरह के अनेक उदाहरणों को
दिया है और बतलाया है कि यह चीन एवं विदेशियों
के विरुद्ध संघर्ष का एक प्रधान कारण था।

५. ईसाई धर्म का प्रचार — वे चीन में व्यापारी के
अतिरिक्त ईसाई धर्म के प्रचारक भी थे। 13वीं सदी
से लेकर 16वीं सदी तक के बीच अनेक रोमन
कैथोलिक धर्म प्रचारक चीन आये थे। 1601 में
मेटेओरिसी के नेतृत्व में कुछ पादरी पेकिंग आए
और वे कुछ को ईसाई बनाने में सफल रहे।
इसको लेकर भी चीन में असंतोष था। वे पोप की
सत्ता को मानते थे। इससे चीन की सम्राट की
सर्वोच्चता में कमी आती थी। 1724 में सम्राट
ने एक आदेश जारी कर ईसाई धर्म के
प्रचारकों को ईसाई धर्म प्रचार से मना कर
दिया। पश्चिमी देशों से प्रारंभ में आने वाले
विदेशी व्यापारी और धर्म प्रचारक थे। इस प्रश्न
को लेकर भी चीन के साथ मतभेद बढ़ता गया

तात्कालिक कारण-

इन सभी कारणों को लेकर ब्रिटेन एवं चीन में आपसी मतभेद था। युद्ध के पक्ष में अनुकूल पृष्ठभूमि तैयार हो गयी थी और इसके लिए तात्कालिक घटना की जरूरत थी जो युद्ध का आधार बने। यह अवसर अफीम के व्यापार पर मिला।

भारत से ब्रिटेन को काफी अफीम प्राप्त होता था इसका निर्यात चीन में किया जाता था। धीरे-धीरे चीन के लोग अफीम के आदि बन गए। चीन में अफीम की मांग बढ़ने लगी। इससे ब्रिटेन को काफी मुनाफा होती थी। जब मंचू सरकार अफीम के व्यापार पर आपत्ति प्रकट की तो अंग्रेज व्यापारी काफी नाराज़ हो गए। इससे चीन में वित्तीय संकट उत्पन्न हो रहा था। इसके बदले चाँदी काफी मात्रा में चीन से ब्रिटेन चली जाती थी। चाँदी के सिक्के महंगे हो गए। इसके लिए तांबा के अधिक सिक्के देने पड़ते थे।

चीन पर इस अफीम व्यापार का बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा था। चीन की आर्थिक दशा खराब हो रही थी। अफीम के सेवन से लोगों का नैतिक पतन हो रहा था। अफीम सेवन का स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा था। अतः इस व्यापार को रोकने के लिए कानून पारित की गयी। कानून की दृष्टि में अफीम के व्यापार पर कड़ी नजर रखने के लिए अनेक पदाधिकारी नियुक्त किये गये।

लार्ड नेपियर का चीन आगमन - चीन की कड़े रवैया में सुधार लाने के लिए नेपियर ने प्रयास किया। H.B. Morse ने International relations में लिखा है कि नेपियर अपने प्रयास में असफल रहे और चीन की सरकार ने इनकी मांग को ठुकरा दिया।

नेपियर की असफलता एवं चीन की

सरकार की नियति से अंग्रेज शक्ति युद्ध की ओर

इसी समय चीन की मंचू सरकार कठोरतापूर्वक पेश आई। अफीम के व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए द्वितीय अफीम कानून पारित किया गया। इसके बावजूद भी अफीम का व्यापार दिनपर जारी रहा। चीन में 10 मार्च 1839 को विशेष अफीम कमिश्नर के पद पर कैंटनआकरे को नियुक्त किया गया। वे कड़ा एवं अनुभवी आदमी था। अफीम से भरा एक जहाज पकड़ा गया। इस पर से सारी अफीम की पेटियाँ फेंक दी गयी। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में जो प्रभाव बोस्टन टी पार्टी का रहा वही भूमिका इस घटना का प्रथम अफीम युद्ध पर रहा। ब्रिटेन युद्ध के लिए अवसर खोज रहा था। अफीम ने इसे अच्छा अवसर प्रदान किया। यह युद्ध अफीम के प्रश्न पर लड़ा गया अतः इसे अफीम युद्ध कहा जाता है।

परिणाम —

पूर्वी एशिया में विदेशी साम्राज्यवाद के प्रसार में प्रथम एवं द्वितीय अफीम युद्ध के परिणाम निर्णायक रहे। साम्राज्यवादी विस्तार में प्रथम अफीम युद्ध के परिणाम निर्णायक सिद्ध हुए। इस युद्ध के पश्चात चीन के स्वर्णिम एवं आरक्षित साम्राज्य को पाश्चात्य शक्तियों की लूट-खसोट के लिए खोल दिया गया। प्रथम अफीम युद्ध में पराजित होकर चीन ने नानकिंग की संधि किया। इससे प्रकार अपमानजनक संधि द्वितीय अफीम युद्ध के बाद की गयी पेकिंग की संधि थी।

नानकिंग की संधि के बाद चीन में ब्रिटेन के अतिरिक्त अन्य देशों के लिए भी प्रवेश का द्वार खोल दिया गया। दोनों अफीम युद्धों के परिणामों में एक तुलनात्मक अन्तर यह है कि प्रथम अफीम युद्ध में इन पाश्चात्य शक्तियों को केवल साम्राज्यवादी लाभ प्राप्त होते रहे जबकि द्वितीय अफीम युद्ध के

बाद चीन की सरकार उनके लाभ की कठपुतली बन गई। संक्षेप में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद शोषण एवं अपमान का शिकार होकर यूरोप का रोगी की तरह चीन एशिया का मरीज बन गया।
विनायक के शब्दों में "चीन एक तरबूज का पश्चिमी शक्तियों द्वारा बन्दरबाँट शुरू किया गया।"
इसके साथ ही चीन के स्वर्णिम साम्राज्य और कन्फ्यूशियसवादी प्राचीन संस्कृति का दौर चूर-चूर हो गया।

इसी शोषण एवं अपमान के साथ चीन की मुक्ति के लिए राष्ट्रीय जागरण भी शुरू हुआ जिसके फलस्वरूप ताइपिंग एवं बॉक्सर विद्रोह हुए।

साम्राज्यवादी लाभ की दृष्टि से अफीम युद्ध का परिणाम महत्वपूर्ण रहा। इसके बाद चीन का दरवाजा खुल गया। इसके पहले केवल कैंटन का बन्दरगाह खुला था। आज कई बन्दरगाह खोल दिये गये। ब्रिटेन के साथ अन्य देशों के व्यापारियों को भी सुविधाएँ प्रदान की गई।

- कैंटन, फूचौ, संघाई बन्दरगाह व्यापारिक लाभ के लिए खोल दिये गये।
- विदेशी व्यापारियों को इच्छानुसार व्यापारिक लेन-देन की सुविधा मिली।
- चीन पर दो हजार करोड़ डॉलर युद्ध के हर्जाने के रूप में लाद दिया गया।
- चीन में आयात-निर्यात पर 5% टैक्स निर्धारित किया गया।
- चीन भविष्य में दूसरे देशों को जो भी व्यापारिक सुविधाएं देगा वे ब्रिटेन को भी प्राप्त होंगी।

विनायक ने लिखा है - ये सभी सुविधाएँ आर्थिक एवं व्यापारिक थीं।

इस युद्ध में पराजित होने के बाद चीन दूसरे देशों का भी शिकार बना। अमेरिका के साथ

एक देश की अपमानजनक संधि की गयी और ह्वामपोआ की संधि की जाती है इस तरह चीन में साम्राज्यवादी प्रसार की तीव्र प्रक्रिया शुरू हुई।

- **राजनीतिक लाभ** — चीन में पाश्चात्य देशों के राजनीतिक साम्राज्यवाद के विस्तार के दृष्टिकोण से भी अफीम युद्ध का परिणाम महत्वपूर्ण रहा। आर्थिक साम्राज्यवाद के साथ राजनीतिक साम्राज्यवाद की नींव डाली गयी। नानकिंग की संधि, ह्वामपोआ की संधि और पेकिंग की संधि में कुछ ऐसी ही धाराएं थी जिससे राजनीतिक क्षेत्र में भी कुछ लाभ चीन को प्रदान किए गए। नानकिंग की संधि के कारण हांगकांग पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया।

- **प्रशासनिक सम्प्रभुता** — अफीम युद्ध के बाद चीन की सर्वोच्च सम्प्रभुता भी प्रभावित हुई। यह पराजय एक महान राष्ट्रीय अपमान था। विदेशी नागरिक चीन की भूमि में रहकर भी इसके कानून से पूर्णतः मुक्त रहे। धर्म प्रचार में आई मिशन राजनीतिक मामलों में धीरे-धीरे हस्तक्षेप करने लगीं।

- **मंचू सरकार की दुर्बलता** — प्रथम अफीम युद्ध में पराजित होने के बाद भी मंचू सरकार की दुर्बलता प्रकट होने लगी। चीन की सामरिक शक्ति का पर्दाफाश हो गया। विदेशी शक्तियों का मनोबल बढ़ने लगा। वे मंचू सरकार की अस्तित्व को समाप्त नहीं करना चाहते थे अपितु इसी के द्वारा कलाइड के शब्दों में शोषण करना चाहते थे। मंचू सरकार को कमजोर बनाकर, अपने प्रभावों को बढ़ाना एवं स्वार्थों को पूरा करना चाहते थे। फ्रांस में कैथोलिकों को गिरिजाघर बनाने एवं प्रचार करने का अधिकार मिल गया।

- **हीनभावना का अनुभव** — प्रथम अफीम युद्ध की पराजय एवं विशेषकर द्वितीय अफीम युद्ध की पराजय के बाद नागरिकों में आत्मग्लानि एवं हीनभावना का आभास हुआ। क्योंकि स्वर्णिम साम्राज्य का दर्प चूर-चूर

हो गया। वस्तुतः विश्व की सर्वश्रेष्ठ कन्फ्यूशियस वाली संस्कृति के सन्दर्भ में जो चीन वासियों का आदर्श विचार था वह पूरी तरह खंडित हो गया। यह एक मनोवैज्ञानिक कमजोरी बन गई जिसके कारण चीन एक कमजोर राष्ट्र बनता गया और बाद में इसे "Sickman of Asia" की संज्ञा दी गई।

• नगरों का विकास – प्रथम एवं द्वितीय अफीम युद्ध के परिणाम एक दृष्टिकोण से चीन के लिए लाभदायक रहा क्योंकि विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ गया। चीन में आन्तरिक व्यापार बढ़ गया। इससे नगरों का विकास हुआ। इसके पूर्व चीन की संस्कृति मूलतः एक ग्रामीण संस्कृति थी। व्यापार से सम्बन्ध बढ़ा एवं नगरों का विकास हुआ।

• राष्ट्रीयता का जागरण – प्रथम एवं द्वितीय अफीम युद्ध के परिणाम जहाँ चीन के लिए अशुभचिन्तक, अपमानजनक एवं निराशाजनक रहे वहीं इसके चलते चीन में मुक्ति के लिए राष्ट्रीयता का जागरण हुआ। चीन की दुर्दशा का एक मात्र कारण मंचू सरकार एवं विदेशी शक्ति समझी जाती थी। अतः यहाँ "मंचू हटाओ – विदेशी भगाओ" का नारा बुलंद किया गया। फलस्वरूप इसी जागरण के कारण ताइपिंग एवं बॉक्सर विद्रोह हुए। मंचू सरकार इस विद्रोह को दबाने के लिए सुधार-सम्बन्धी कुछ कार्यक्रम प्रस्तुत की लेकिन इसके परिणाम निराशाजनक रहे। अन्ततः 1911 में महान चीनी क्रांति हुई। इस तरह इसके तात्कालिक एवं दूरगामी परिणाम महत्वपूर्ण रहे। इसे ही अफीम की क्रांति कहते हैं।